अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

शोध विषय: आधुनिक हिंदी साहित्य पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' का प्रभाव

धर्मवीर[1], प्रोफेसर बाबूराम[2]

[1]हिन्दी विभाग।, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर (रोहतक)
[2]हिन्दी विभागाध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर (रोहतक)

भूमिका

आधुनिक हिंदी साहित्य की भारतीय समाज के सांस्कृतिक , राजनीतिक , धार्मिक, राष्ट्रवादी चिंतन और वैचारिक चिंतन को दिखाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1850 से लेकर वर्तमान समय तक समाज में हुए संघर्ष और संघर्षों से उपजे निरंतर परिवर्तनों को आधुनिक हिन्दी साहित्य ने आवाज़ दी। विशेष रूप से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ऊपजी राष्ट्रीयता की भावना को साहित्य ने विशेष बना दिया। इस प्रकार की भावना को एक दिशा देने में साहित्य ने अपनी महती भूमिका निभाई। इसी परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य पर संघ के राष्ट्रवादी चिंतन का प्रभाव दिखाई देता है और इसका अध्ययन का विषय भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आज तो सारा समाज संघ को जानने लगा है, सारा देश संघ की राष्ट्रवादी गतिविधियों, चिंतन और सुव्यवस्थाओं से हतप्रभ व प्रभावित है।

संघ की स्थापना 1925 में नागपुर, महाराष्ट्र में समाज में सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी भावना को जागृत करने के उद्देश्य से हुई थी। संघ की विचारधारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित है, जिसमें भारत को सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखा जाता है। राजनीति से तटस्थ रहकर संघ सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों को समाज के लोगों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता है। राजनीति के क्षेत्र व अन्य विभिन्न क्षेत्रों में संघ की इस विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है। हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवादी स्वर पहले से ही देखा जा सकता है, लेकिन संघ ने एक विशेष दिशा देने का कार्य किया। संघ के इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को स्वतंत्रता आंदोलन में बल मिला और स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र के पुनर्निर्माण में में इस विचारधारा ने समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखा। संघ की इसी राष्ट्रवादी दृष्टि के परिणामस्वरूप साहित्य में भारतीय संस्कृति और परंपरा को सृजन का माध्यम बना दिया। आधुनिक हिंदी के अनेक रचनाकार संघ की इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा से प्रभावित रहे हैं।

इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चिंतन, भारतीय जीवन मूल्य और राष्ट्रभक्ति को प्रमुखता दी। इन अनेक रचनाकारों में से कुछ नाम इस प्रकार हैं – पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, वैद्य गुरुदत्त और नरेंद्र कोहली, जिन्होंने आधुनिकता के साथ परंपरागत मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया। आधुनिक हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में संघ विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है ; जैसे – कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता और अनेक वैचारिक लेखों में संघ की इस विचारधारा के दर्शन होते हैं। केवल साहित्य को नहीं, बल्कि साहित्य की अभिव्यक्ति शैली, भाषा शैली और दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया। साहित्यकारों ने भारतीय इतिहास, परंपराओं और भारतीय मिथकों को नए संदर्भ में प्रस्तुत किया है, जिससे भारतीय संस्कृति का विकास हुआ है। साहित्य में संघ की इस विचारधारा पर साहित्यकारों में परस्पर वैचारिक भिन्नता रही है। कुछ साहित्यकारों ने इसे साहित्य के लिए दायरा सीमित करने वाला माना, तो कुछ ने इसे भारतीय पुनर्जागरण से जोड़कर देख है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा ने आधुनिक हिंदी साहित्य को किस प्रकार से प्रभावित करके, साहित्य में परिवर्तन और प्रवृत्तियां विकसित की हैं। उन सब का अध्ययन करते हुए प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं का विश्लेषण, उनके वैचारिक आधार की समीक्षा ,साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों का अध्ययन करना इस शोध का विषय रहेगा। यह अध्ययन साहित्य की समझ को समृद्ध करते हुए भारतीय समाज की वैचारिक संरचना को भी समझने में सहायक बनेगा।

मुख्य शब्द – भारतीय , सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, परंपरा, मूल्य, समाज।

संघ की वैचारिक पृष्ठभूमि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपने साथ लेकर चलती है। संघ की विचारधारा का प्रभाव आधुनिक हिन्दी साहित्य के उन लेखकों, कवियों पर दिखाई देता है, जो पश्चिमी संस्कृति और आधुनिकता का विरोध करते हुए, भारतीय

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

परंपराओं, मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इन साहित्यकारों की लेखनी से अतीत के वीर नायकों को चित्रित करके सांस्कृतिक गौरव का पुनरूत्थान हुआ है। विदेशी विचारधाराओं, विचार, चिंतन आदि को त्याग भारतीय चिंतन को अपनाने पर बल दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के 'एकात्म मानववाद' ने साहित्य में अपनी जगह बनाई। सावरकर के 'हिन्दुत्व' और गोलवलकर के 'सांस्कृतिक गौरव' के विचारों ने हिन्दी के अनेक लेखकों को प्रभावित किया। यह विचारधारा पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण का विरोध करती है और भारतीय परंपरा और मूल्यों को पुनः अपनाने पर बल देती है।

छायावादोत्तर हिन्दी कविता में संघ की विचारधारा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता **'विप्लव गायन'** , माखनलाल चतुर्वेदी की कविता **'कैदी और कोकिला'** आदि को राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत माना जाता है। इसके बाद इसी श्रृंखला में अटल बिहारी के काव्य में राष्ट्रीय स्वर भरपूर है। जैसे इनकी एक कविता की कुछ पंक्तियां देखिए –

"हार नहीं मानूंगा रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं,
गीत नया गाता हूं।"[1]

अटल जी की इन पंक्तियों में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण 'मेरी इक्यावन कविताएं' काव्य संग्रह में राष्ट्रवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। अटल जी केवल राजनेता नहीं थे, बल्कि राजनीति में रहते हुए भी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयकरण करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। राष्ट्र के प्रति अगाध श्रद्धा उनके लेखों, विचारों और कविताओं में दिखाई देती है। संघ से प्रत्यक्ष रूप से माखनलाल चतुर्वेदी का जुड़ाव नहीं था, किंतु विचार से राष्ट्रवादी स्वर संघ के स्वयंसेवकों को प्रेरणा देता रहा। इनकी 'पुष्प की अभिलाषा' समाज और स्वयंसेवकों के लिए विशेष रूप से मार्गदर्शन का कार्य करती रही। 1940 में जन्मे और 2021 अति आधुनिक समय तक अपनी लेखनी से जन जागरण करने वाले नरेंद्र कोहली का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हो जाता है। इन्होंने भारतीय इतिहास और पुराणों को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया। भारतीय पुराण और इतिहास की गरिमा को पहचानकर समाज को इसकी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया। रामायण-महाभारत को आधुनिक संदर्भ के साथ प्रस्तुत किया। रामकथा पर आधारित 'दीक्षा' और 'अभ्युदय' उपन्यासों की श्रृंखला राम को अलौकिक अवतार नहीं मानती, बल्कि राम को अपना कर्म करने वाला, मानवीय रूप में, एक श्रेष्ठ जननायक के रूप में प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने इस उपन्यास में कहा है –"राम का संघर्ष केवल रावण से नहीं था, वह उस हीनभावना से था जिसने आर्यावर्त के जनमानस को जकड़ रखा था । सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ है- स्वयं की शक्ति पर विश्वास और अन्य के विरोध अधिक खड़ा होना।"[2] इस प्रकार रामकथा के माध्यम जन शक्ति का जागरण करने का कार्य नरेंद्र कोहली ने किया। उनका 'दीक्षा' उपन्यास सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का घोषणापत्र माना जा सकता है। यहां राम सोई हुई जन शक्ति जगाने का काम करके संगठित करने का काम करते हैं।

इसी प्रकार दीनदयाल उपाध्याय जी मानते थे कि भारत की पहचान उसकी संस्कृति में निहित रहती है। इनके अनुसार राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई है। इनके साहित्य में राष्ट्र की चेतना को 'चिति' कहा गया। राष्ट्र की आत्मा को व्यक्ति की आत्मा के समान माना और कहा यदि कोई राष्ट्र अपनी चिति अर्थात् आत्मा को खो देता है तो उसका पतन होना शुरू हो जाता है।

दीनदयाल जी कहते हैं कि –"राष्ट्रमात्र जनसमूह नहीं है। जब एक जनसमूह के सम्मुख एक लक्ष्य, एक आदर्श और एक जीवन दर्शन होता है और वह जनसमूह एक भूमि विशेष को मातृभूमि मानकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित करता है, तब वह राष्ट्र कहलाता है।"[3]

इसी प्रकार वैद्य गुरुदत्त के साहित्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के दर्शन होते हैं। इनके लेखन में भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को पुनर्स्थापित करने का भरपूर प्रयास दिखाई देता है। वैद्य गुरूदत्त के साहित्य में राष्ट्रवाद की परिभाषा सांस्कृतिक गतिशीलता में ही निहित है। वे भारत की आत्मा को भारतीय प्राचीन ग्रंथो में निहित मानते हैं। उनके साहित्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के दर्शन करके आने वाले एक चिंतक, विचारक ने लिखा है कि –" गुरुदत्त जी का राष्ट्रवाद पश्चिम के राजनीतिक राष्ट्रवाद से भिन्न है। वह राष्ट्र को केवल एक भूखंड न मानकर एक सजीव इकाई मानते थे, जिनका प्राण उसकी संस्कृति है।"[4]

इसके अतिरिक्त इनके ऐतिहासिक उपन्यास 'विक्रमादित्य' और 'दहिरा' में इतिहास को सांस्कृतिक गौरव के दृष्टिकोण से देखा गया। वे मानते हैं कि भारत की पराजय सैनिक शक्ति की कमी से नहीं हुई, बल्कि संस्कृत विघटन के कारण हुई है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

इस विषय को लेकर एक विचारक लिखते हैं-" वैद्य जी के साहित्य में इतिहास केवल घटनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि वह भविष्य के लिए एक पथ प्रदर्शक है, जो हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने का आह्वान करता है।"[5]

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी साहित्य का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन यह स्पष्ट संकेत करता है कि भारतेंदु युग से शुरू हुई यह धारा छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के बाद समकालीन साहित्य तक आते-आते अधिक परिपक्व हुई है। आधुनिक हिंदी साहित्य ने अपने अतीत का पुनरूद्धार करके आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।, भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद के राष्ट्रवाद ने मनुष्यता की रक्षा की और अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर उसका सामना किया। आधुनिक हिंदी साहित्य ने हिन्दी भाषा को समाज की एकता का आधार बनाया। आधुनिक हिंदी साहित्यकारों ने यह भी माना कि हम अपनी परंपरा से कटकर अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकते । इसलिए हम कह सकते हैं कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधारित आधुनिक साहित्य ने समाज को एकजुट करके, विश्व में अपनी पहचान बनाने में सहायक सिद्ध हुआ। आज भी यह विचारधारा उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी यह स्वाधीनता आंदोलन के समय में थी। आज के युवा वर्ग के लिए भी ऐसा वैचारिक साहित्य समाज और राष्ट्र हित मे सोचने और बहुत कुछ सकारात्मक करने की प्रेरणा दे रहा है ।

संदर्भ सूची

1. अटल बिहारी वाजपेयी, मेरी इक्यावन कविताएं, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 45 ।
2. नरेंद्र कोहली, दीक्षा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2015, पृष्ठ संख्या -112
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय , राष्ट्र चिंतन, नई दिल्ली , सुरूचि प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 42 ।
4. डॉ राजशेखर सिंह, हिन्दी उपन्यास और सांस्कृतिक चेतना, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -84
5. डॉ ओमप्रकाश भारद्वाज, वैद्य गुरुदत्त : व्यक्ति और अभिव्यक्ति, हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 142